Online Available at: www.multiarticlesjournal.com OPEN ACCESS ISSN: 2583-7397

International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary; 2023; 2(3): 11-14

Review Paper

ब्रिटिश कालीन बिहार राज्य में राजनीतिक चेतना की उपादेयता

Author(s): डॉ. अमरेन्द्र कुमार*[1]

[1*] सहायक प्राचार्य, इतिहास विभाग, के.पी कॉलेज मुरलीगंज,बी.एन.एम.यू मधेपुरा, भारत

Corresponding Author: * डॉ. अमरेन्द्र कुमार

सारांश

यह अध्ययन ब्रिटिश कालीन बिहार राज्य में राजनीतिक चेतना की उपादेयता को स्पष्ट करती है। इसका प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में बिहार राज्य से उपजी राष्ट्रीय चेतना के परिवर्तित स्वरुप के रुप में राजनीतिक चेतना के विकास पर प्रकाश डालना है। इस अध्य्यन के अंर्तगत बिहार राज्य में राजनीतिक चेतना उत्पन्न होने के प्रमुख आधार बिंदुओं का विश्लेषण सम्मिलित किया गया है ताकि ब्रिटिश कालीन बिहार में राजनीतिक चेतना के विशुद्ध स्वरुप को समझ पाना सुगम हो।

.

Manuscript Information

Received Date: 07-05-2023
Accepted Date: 15-05-2023
Publication Date: 22-05-2023
Plagiarism Checked: Yes
Manuscript ID: IJCRM:2-3-2
Peer Review Process: Yes

How to Cite this Manuscript

डॉ. अमरेन्द्र कुमार. ब्रिटिश कालीन बिहार राज्य में राजनीतिक चेतना की उपादेयता. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary. 2023: 2(3):11-14.

कूट शब्द: राजनीतिक चेतना, मदरलैंड, ब्रह्म समाज, थियोसोफिकल सोसायटी

प्रस्तावना:

राजनीतिक चेतना का अर्थ केवल राजनीति, राजनेताओं अथवा राज सत्ता से ही नहीं है अपितु यह अपने आप में एक अत्यंत ही विस्तृत अवधारणा है जिसके भीतर मानवीय मूल्यों के प्रति अथवा मानवीय संवेदनाओं की सुरक्षा, विकास तथा सुनिश्चितता का भाव अथवा अधिकार निहित होते हैं। राजनीति को ही मानवीय विकास की चेतना का आधार समझा गया है। अनेकों विद्वानों अथवा इतिहासकारों ने भी राजनीति तथा उससे संबद्ध चेतना को नागरिक हितों की रक्षा का सर्वोपरि उपकरण माना है। भूतकाल में घटित अनेकों उद्धरण इस बात की पुष्टि करते हैं कि दबे कुचले अथवा हीन समझे जाने वाले मानवीय वर्गों के नागरिकों ने राजनीतिक चेतना के बल पर ही तमाम कुरीतियों तथा शोषण को परास्त करने में सफलता अर्जित की है।

अध्ययन उद्देश्य

बिहार राज्य के संदर्भ में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में राजनीतिक चेतना की उपादेयता को स्पष्ट करना।

बिहार में राजनीतिक चेतना

19वींसदी के दौरान भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों के साथ ही बिहार राज्य में भी राष्ट्रीय चेतना की भावना मजबूत होने लगी थी जिसका प्रथम असफल प्रयोग 1857 की क्रांति पर आधारित रहा। बिहार में राजनीतिक चेतना की भावना वर्ष 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही अत्यधिक प्रबल हुई। दरभंगा के महाराज लक्ष्मेशवर सिंह निरंतर कांग्रेस को आर्थिक सहायता प्रदान करते रहे। इसके अलावा 1886 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में तत्कालीन बिहार के गया से नंदकिशोर लाल, मुज्जफरपुर से परमेश्वर नारायण मेहता, पटना से गजाधर प्रसाद, भागलपुर से तारिणी प्रसाद आदि कांग्रेस के प्रतिनिधियों के रुप में शरीक हुऐ। इसके अलावा राजनीतिक चेतना के कुछ महत्वपूर्ण कारक भी रहे जिन्होंने बिहार को राजनीतिक स्तर पर ब्रिटिशों के प्रति सजग तथा जागरूक करने में अहम योगदान दिया। जिनमें -

राजनीतिक सभा तथा आंदोलन

ब्रिटिश दौर में बिहार के भिन्न-भिन्न भागों में राजनीतिक सभाओं ने आम जनमानस को राजनीतिक विचारधारा से जोड़ने में अहम योगदान दिया। इस आम जनमानस में मुख्य रुप से कृषकों तथा आदिवासियों के विद्रोह प्रमुख रहे जिन्होंने न केवल ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दी बल्कि 1942 में हुए हिंसक आंदोलनों जैसे अंग्रेजो भारत छोड़ो तथा करो या मरो विद्रोहों की पृष्ठभूमि को बनाने में सफलता अर्जित की। इसके अतिरिक्त 11 अगस्त 1942 को पटना सचिवालय में घटित हुए छात्र गोलीकांड ने संपूर्ण बिहार में दवानल का कार्य किया। इस घटना में शहीद हुए 7 छात्रों की शहादत ने पूरे सूबे में उबाल ला दिया था। इन शहीद छात्रों में उमाकांत सिन्हा, रामानंद सिंह, सतीश प्रसाद झा, देवीपद चौधरी, रामगोविन्द सिंह, राजेंद्र सिंह तथा जगपति कुमार के दल द्वारा पटना सचिवालय पर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा स्थापित करने हेतु निकाले गए जुलूस पर तत्कालीन जिलाधीश डब्लू.जी. आर्थर द्वारा गोलियां चला देने का आदेश दिया गया था। इसी प्रकार, तानाभगत आन्दोलन से संबंधित आदिवासियों ने एकजुटता दिखाते हुए ब्रिटिश सत्ता की जड़ों को हिलाने में महत्त्वपूर्ण विद्रोह का रास्ता अपनाया। बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र से इन आदिवासियों द्वारा अंग्रेजों का भारी विरोध हुआ। राजनीतिक चेतना का एक अत्यंत ही प्रभावित स्वरुप ब्रिटिश कालीन सत्ता के विरुद्ध छपरा जिले से शांति देवी के नेतृत्व में आयोजित किया गया ब्रिटिश बहिष्कार जुलूस राज्य में महिलाओं की राजनीतिक चेतना का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

जातीय शत्रुता

बिहार राज्य में 19 वी सदी के दौरान राजनीतिक चेतना का प्रबुद्ध स्वरूप दिखाई पड़ता है जिसका आधार राष्ट्रीय चेतना से होकर प्रस्फुटित हुआ था। हालांकि इससे पूर्व ही सामाजिक संरचना को अनेकों कुप्रथाओं ने दूषित कर रखा था परन्तु ब्रिटिशों द्वारा होने वाले शोषण के परिणामस्वरूप ही राजनीतिक चेतना को अधिक बल मिला। वास्तव में औपनिवेशिक काल में प्राप्त होने वाले अवसरों का लाभ उठाने की होड़ सी मच गई थी। जिसका स्पष्ट उदाहरण वर्ष 1912 में बंगाल राज्य में से अलग बिहार राज्य की स्थापना की मांग राजनीतिक चेतना का ही प्रमाण थी। वर्ष 1912 से पूर्व बिहार बंगाल राज्य का ही भूभाग था । अत: अधिकतर सरकारी दफ्तरों में बंगाली भाषा का प्रभुत्व स्थापित था। इसका कारण यह था कि बंगालियों ने ही सबसे पहले अंग्रेजी भाषा को सीखा था, बाद में कायस्थों, यादवों तथा मुस्लिमों ने अंग्रेजी भाषा की शिक्षा ग्रहण की। इस प्रकार 1912 मे कायस्थों ने बंगाली भाषा के प्रभुत्व को चुनौती देते हुए अलग बिहार राज्य की मांग कर डाली और बिहार के नेताओं ने नारा दिया कि " बिहार बिहारियों के लिए"।

अखबार तथा प्रेस की भागीदारी

बिहार में प्रेस का विकास लगभग 19वीं शताब्दी के अंत में हुआ। गुरु प्रसाद सेन ने बिहार से पहला अंग्रेजी समाचार पत्र 'द बिहार हेराल्ड' का प्रकाशन 1875 में शुरू किया। उसके बाद 1881 में 'इंडियन क्रॉनिकल' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। राष्ट्रीय आंदोलन में एक तरफ जहां आदिवासी, किसान, छात्र, दलित तथा महिला वर्गों ने राजनीतिक चेतना का प्रमाण प्रस्तुत किया तो वहीं दुसरी ओर तत्कालीन अखबारों, पत्र पत्रिकाओं तथा प्रिंटिग प्रेसो ने भी राष्ट्रीय चेतना को घर घर तक पहुंचाने में अहम योगदान दिया।

मदरलैंड - दीघा के निकट सदाकत आश्रम से प्रारंभ होने वाले वाला यह अखबार 30 मई 1921 को मजहरूल हक द्वारा प्रकाशित किया जाने वाला अत्यंत चर्चित अखबार रहा। इसके चर्चित होने की रुप रेखा के अंतर्गत उन लेखों को आधार माना गया जिन्हें अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध तथा

उनके अत्याचारों के संबंध में लिखा गया था। इस अखबार की चर्चाओं में ब्रिटिश सरकार को सकते में डाल दिया था परिणामस्वरूप 26 जुलाई 1922 को मजहरुल हक को गिरफ्तार कर लिया गया।

सामाजिक/धार्मिक सुधार आंदोलन

19वीं शताब्दी के धर्म एवं समाज सुधार आंदोलन का बिहार पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा।हिंदू समाज में नवजागरण लाने में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी आदि का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

ब्रह्म समाज

भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत तथा ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय का बिहार से संबंध रहा था।उन्होंने पटना में रहकर उर्दू एवं फारसी की शिक्षा ग्रहण की थी। ईस्ट इंडिया कंपनी की नौकरी रामगढ़ से आरंभ की थी। हिंदू धर्म को अंधविश्वास से मुक्त कराने और नैतिक आचरण एवं एकेश्वरवादी, विश्वास पर बल देने में इस आंदोलन का मुख्य योगदान रहा है।समाज सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति लाने में इसकी भूमिका रही है. बिहार में इसके प्रमुख नेताओं में गुरु प्रसाद सेन, जैन प्रकाश चंद्र राय, हरिसुंदर बोस, शिवचंद्र बनर्जी, डी. एन. सेन, रजनीकांत गुहा, बजरंग बिहारी लाल, निवारण तंत्र मुखर्जी और कामिनी देवी के नाम शामिल है। उनके सहयोगियों में केशव चंद्र सेन की प्रेरणा से पटना और गया में ब्रहा समाज की शाखाएं स्थापित की गई।डॉ. कृष्ण नंदन घोष द्वारा भागलपुर में ब्रहा समाज की शाखा स्थापित की गई ।बिहार में यह पहली शाखा थी, परंतु शीघ्र ही पटना, मुंगेर, जबलपुर नगरों में भी इसकी शाखाएं खुली।

थियोसोफिकल सोसायटी

थियोसोफिकल सोसायटी के संस्थापक कर्नल ओलकोंट ने सर्वप्रथम 1883 में और एनी बेसेंट के साथ 20 जनवरी, 1894 को बिहार की यात्रा की थी. उस समय पटना में यह आंदोलन प्रारम्भ रहा था। इस संस्था ने धार्मिक समन्वय ,साम्प्रदायिक भाईचारे और अध्यात्म के विकास में योगदान दिया है। होमरूल आंदोलन के माध्यम से श्रीमती एनी बेसेंट ने स्वतंत्रता संग्राम को भी नई प्रेरणा प्रदान दी जिसका इसका प्रभाव देश में और बिहार में भी महसूस किया गया । 1904 ई. तक इसकी शाखाएं भागलपुर, गया, आरा, बांकीपुर, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मोतिहारी, छपरा, पूर्णिया, सीतामढ़ी, और देवघर आदि में संगठित हो चुकी थी।बिहार में इसके प्रमुख नेता मधुसूदन प्रसाद, रामाश्रय प्रसाद, बैजनाथ सिंह, परमेश्वर दयाल, रघुवीर प्रसाद, सरफराज हुसैन और नारायण सिन्हा आदि थे। पेशे से वकील श्री सिन्हा 1919 ई. से 1923 ई. तक थियोसोफिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के महासचिव भी रहे।

रामकृष्ण मिशन

1920 में पहली बार रामकृष्ण मिशन की शाखा बिहार में जमशेदपुर (अब झारखंड में) स्थापित हुई. पटना एवं देवघर (झारखंड) में इसकी शाखा 1922 में खुली. अध्यात्म और शिक्षा के प्रसार में इस संस्था का महत्वपूर्ण योगदान रहा. बिहार में इसके प्रमुख नेताओं में जितेंद्र नाथ मुखर्जी और डॉक्टर राजेश्वर ओझा के नाम उल्लेखनीय है.

अंग्रेजों द्वारा आर्थिक शोषण

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुख आधार ही ब्रिटिशों द्वारा भारतीयों का आर्थिक शोषण था। अंग्रेजों के आगमन ने शीघ्र ही भारतीय परिवेश को मनमुताबिक कानूनों तथा ब्रिटिश सत्ता की कठपुतली बना दिया था। वे न केवल भारतीयों का आर्थिक शौषण ही करते थे बल्कि उनका विरोध करने वालों को कठोर यातनाओं तथा अत्याचारों से गुजरना पड़ता था। इस प्रकार के शोषण ने राज्य के लोगों के जीवन स्तर को भी बुरी तरह प्रभावित किया। जमींदारों द्वारा बिहार के चंपारण क्षेत्र के किसानों को जबरन नील की खेती करने हेतु मजबूर किया जाने लगा तथा तीन कठिया जैसी कठोर शर्तों को लाकर न केवल कृषकों समूहों का आर्थिक शोषण किया गया बल्कि उन्हें अनेकों यातनाओं को भी सहन करना पड़ता था। जिनके चलते महात्मा गांधी जी द्वारा बिहार राज्य में चंपारण सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। वास्तव में यह सत्याग्रह न केवल कृषकों के हितों के विरुद्ध सरकारी तंत्र को चुनौती था बल्कि इसमें आम जनमानस की भागीदारी ने भी देश के अन्य भागों में किसान तथा आदिवासियों के संघर्षों में जान फूंक दी थी। गांधी के अधिकतर समर्थकों में राष्ट्रीय कांग्रेस के बड़े बड़े नेताओं का नेतृत्व देश के भिन्न -भिन्न स्थानों पर राजनीतिक चेतना की भावना को प्रबल करने में लगा था।

इसका एक उदाहरण 4 मई 1930 को महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के दौरान देखा गया जब छपरा के कैदियों ने वस्त्र पहनने तथा नग्न रहकर विरोध करने के मार्ग को अपनाया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के अंर्तगत सम्मिलित ऐतिहासिक घटनाओं एवम् उद्धरणों का समावेश इस बात की पुष्टि करता है कि ब्रिटिश कालीन सत्ता के दौरान बिहार राज्य ने अत्यंत ही मजबूत राजनीतिक चेतना का विकास प्रारम्भ कर लिया था। राजनीतिक चेतना के केंद्र में अनेकों ऐसे उदाहरण समाहित रहे हैं जिन्होंने ब्रिटिश सरकार के शोषणवादी रवैए को प्रस्तुत किया है। इनके अंतर्गत आदिवासियों का शोषण, कृषकों का शोषण, छात्रों , महिलाओं तथा दलितों का शोषण तो प्रमुख बिंदु रहे ही साथ ही अनेकों समाज सुधार कार्यक्रमों, धार्मिक आंदोलनों का भी उतना ही प्रभाव देखने को मिला।

संदर्भ सूची

1. ओम प्रकाश प्रसाद, बिहार एक ऐतिहासिक अध्ययन, राजकमल प्रकशन 2013
2. डा. सुष्मिता कुमारी, ग्रामीण बिहार के समाजिक आर्थिक इतिहास, ऑरेंज बुक प्रकाशन 2020
3. अमित राज, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार के महानायकों की गौरव गाथा, 1919-47 ई॰, जानकी प्रकाशन, 2017
4. युवराज देव प्रसाद, बिहार के विकास में महिलाओं की भूमिका, बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, 2012
5. मो. ज़ाकिरहुसैन, 1857 औरबिहारकीपत्रकारिता, प्रभात प्रकाशन, 2013

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.